"इन्दु" स्मृति-माला का नयाँ पुष्प—

कर्म-योग

[विवेकानन्द-ग्रन्थावली, संख्या ३]

लेखक—

स्वामी विवेकानन्द

अनुवादक—

श्रीरामविलास शर्मा, एम०ए० (ऑनर्स)

प्रकाशक—

सरस्वती पुस्तक-भण्डार

आर्यनगर, लखनऊ

प्रथमावृत्ति २००० | अप्रैल सन् १९३९ ई० | मूल्य ॥=)

कर्मयोग

हम जो कुछ हैं ? उसके लिए हम उत्तरदायी हैं। हम जो कुछ भी होना चाहें, वह हो सकने की शक्ति हममें है। यदि हमारा वर्तमान रूप हमारे पूर्व कार्यों का परिणाम है तो निश्चय ही अपने आज के कर्मों द्वारा हम अपना अभीप्सित भावी रूप भी बना सकते हैं, इसलिए हमें कर्म करना सीखना चाहिए।

—स्वामी विवेकानन्द

"इन्दु" स्मृति-माला का नयाँ पुष्प—

कर्म-योग

[विवेकानन्द-ग्रन्थावली, संख्या ३]

लेखक—

स्वामी विवेकानन्द

अनुवादक—

श्रीरामविलास शर्मा, एम० ए० (ऑनर्स)

प्रकाशक—

सरस्वती पुस्तक-भण्डार

आर्यनगर, लखनऊ

प्रथमावृत्ति २००० | अप्रैल सन् १९३९ ई० | मूल्य ।।।=)

प्रकाशक—
श्रीरामविलास पाण्डेय
अध्यक्ष—सरस्वती-पुस्तक-भण्डार,
आर्यनगर, लखनऊ,

सर्वाधिकार स्वरक्षित

मुद्रक—
पण्डित मन्नालाल तिवारी,
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस,
लखनऊ.

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक स्वामी विवेकानंद के न्यूयार्क में दिये गये आठ व्याख्यानों का अनुवाद है। यद्यपि कोई योग औरों से न्यून नहीं, उनका समुचित अभ्यास करने से समान फल मिलता है, तथापि कर्मयोग के भीतर जो एक साहसिकता, एक शूरता है, वह शायद औरों में नहीं। अबाध गति से चलते संसार-चक्र में उसके कठोर घर्षण का भय न कर कूद पड़ना, उसके अनगनित यंत्रों की पीड़ा सह अंत में उसे वश में कर लेना, जीवन की यह कविता इन व्याख्यानों में सविशेष झलकती है। गीता की वाणी का अनुकरण करते स्वामी विवेकानंद फिर एक बार सबको संसार का वीरता पूर्वक सामना करने के लिये आहूत करते हैं। यहाँ उन्होंने अंकपित स्वर से मनुष्य मात्र की महत्ता की घोषणा की है। क्षुद्र से क्षुद्र स्थिति का व्यक्ति भी कर्मयोगी हो महत्तम के सम्मान का अधिकारी हो सकता है। अपने-अपने विकास का मार्ग सबके आगे खुला है। कर्मयोग की यही शिक्षा है कि मनुष्य उसपर चलकर अपनी पूर्णता का अनुभव कर सके।

अनुवादक—